The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 4 | April 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: शिक्षक शिक्षा के संदर्भ में

डॉ0 राम विलास यादव

सहायक अध्यापक

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords :
शिक्षक शिक्षा, ज्ञान, शिक्षण कौशल, पहल, और आकांक्षाओं

ABSTRACT

शिक्षक शिक्षा का मानव जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षक शिक्षा में एक है वास्तविक ज्ञान, तथ्यात्मक जानकारी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान, सार्थक शिक्षा, सकारात्मक सोच, गुणवत्तापूर्ण ज्ञान, व्यक्तिगत संज्ञानात्मक विकास, दृष्टिकोण, शिक्षण कौशल विकास और विभिन्न प्रकार के जीवन कौशल। कुशल शिक्षण प्रक्रिया के माध्यम से प्राप्त की गई सीख स्थायी, व्यावहारिक, और कभी नहीं भूला. शिक्षक शिक्षा किसी भी स्तर की शिक्षा की आधारशिला है, जो बच्चे को उसकी क्षमता के आधार पर आगे बढ़ने की दिशा प्रदान करता है तात्कालिक समय एवं परिस्थिति के अनुसार रुचि। राष्ट्रीय में शिक्षा नीति 2020 पर सार्थक चर्चा एवं पहल की गई है वर्तमान के अनुरूप अपेक्षाएँ, चुनौतियाँ एवं उनके समाधान के उपाय शिक्षक शिक्षा में समय. क्रियान्वयन में शिक्षकों की अहम भूमिका होगी शिक्षक शिक्षा और विभिन्न चुनौतियों और समस्याओं के समाधान से संबंधित नीतियां। इन बातों को ध्यान में रखते हुए शिक्षक में समग्र परिवर्तन करना होगा शिक्षा। इस लेख में शिक्षक शिक्षा की विभिन्न नीतियों और विभिन्न इस संदर्भ में शिक्षक शिक्षा में सुधार के उपायों पर चर्चा की गई है राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार शिक्षकों को तैयार किया जा सके भारत में भविष्य की

आकांक्षाएँ और आवश्यकताएँ।

परिचय

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, 21वीं सदी की पहली शिक्षा नीति, जो 34 वर्ष बाद आया, के क्षेत्र में एक प्रमुख एवं ऐतिहासिक दस्तावेज है शिक्षा। आज़ादी के बाद यह भारत की तीसरी शिक्षा नीति है। शिक्षा के लिए पहली नीति 1968 में प्रख्यापित की गई और दूसरी थी 1986 में लागू किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य शिक्षा और सीखने पर ध्यान केंद्रित करना है "भारत को एक वैश्विक ज्ञान महाशक्ति" बनाना। एनईपी 2020 का लक्ष्य एक बनाना है 2040 तक कुशल शिक्षा प्रणाली, जिसमें सभी शिक्षार्थियों को उनकी सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा तक समान पहुंच प्राप्त हो। इसका उद्देश्य सृजन करना है एक नई प्रणाली जो 21वीं सदी की शिक्षा के महत्वाकांक्षी लक्ष्यों के अनुरूप है, भारत की परंपराओं और मूल्य प्रणालियों पर निर्माण करते हुए एसडीजी-4 को शामिल करना। एनईपी 2020 इसका उद्देश्य व्यावसायिक सहित उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात को बढ़ाना है 2035 तक शिक्षा 26 प्रतिशत से 50 प्रतिशत तक। सभी उच्च शिक्षा संस्थान (एचईआई) का लक्ष्य बहु-विषयक संस्थान बनना होगा। शिक्षक के क्षेत्र में शिक्षा, 2030 तक, शिक्षण के लिए न्यूनतम डिग्री योग्यता चार वर्ष है एकीकृत बी.एड. एक डिग्री होगी. शिक्षकों को भी ऑनलाइन प्रशिक्षित किया जाएगा डिजिटल को पाटने में मदद के लिए भारतीय स्थिति के लिए प्रासंगिक शैक्षिक विधियाँ विभाजित करना। भारत के संविधान के निदेशक सिद्धांतों में कहा गया है कि 6 से 14 वर्ष के बच्चों के लिए अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिए आयु। 1948 में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग का गठन किया गया डीआर की अध्यक्षता राधाकृष्णन. तभी से राष्ट्रीय का निरूपण हुआ शिक्षा नीति की शुरुआत भी हो चुकी है। अगस्त 1985 में 'चुनौती की चुनौती' नामक एक दस्तावेज जारी किया गया 'शिक्षा' का निर्माण किया गया जिसमें भारत के विभिन्न वर्गों (बौद्धिक, सामाजिक, राजनीतिक, व्यावसायिक, प्रशासनिक आदि) से संबंधित अपनी टिप्पणियाँ दीं शिक्षा और 1986 में, भारत सरकार ने 'नई शिक्षा नीति' का मसौदा तैयार किया 1986. इस नीति की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह थी कि इसमें एक समान को स्वीकार किया गया पूरे देश और अधिकांश राज्यों के लिए शैक्षिक संरचना को अपनाया गया 10+2+3 संरचना। भारत में शिक्षक शिक्षा नीति समय के साथ तैयार की गई है और शिक्षा की विभिन्न रिपोर्टों में निहित सिफ़ारिशों पर आधारित है समितियाँ/आयोग, जिनमें से महत्वपूर्ण हैं: कोठारी आयोग (1966), चट्टोपाध्याय समिति (1985), राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनपीई)। 1986/92), आचार्य राममूर्ति समिति (1990), यशपाल समिति (1993) और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एनसीएफ, 2005)। बच्चों का निःशुल्क अधिकार और अनिवार्य शिक्षा (आरटीई) अधिनियम, 2009, जो 1 अप्रैल को लागू हुआ, 2010, देश में शिक्षक शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण निहितार्थ रखता है।

शिक्षक शिक्षा की रूपरेखा

देश के संघीय ढांचे में हालांकि व्यापक नीति और कानूनी ढांचा है केंद्र सरकार द्वारा शिक्षक शिक्षा पर कार्यान्वयन प्रदान किया जाता है विभिन्न कार्यक्रमों और योजनाओं का कार्यान्वयन मुख्य रूप से राज्य सरकारों द्वारा किया जाता है। स्कूली बच्चों की शैक्षिक उपलब्धियों में सुधार लाने का व्यापक उद्देश्य है दोहरी रणनीति: (ए) स्कूल प्रणाली (पूर्व-सेवा) के लिए शिक्षकों को तैयार करना प्रशिक्षण), और (बी) मौजूदा स्कूल शिक्षकों (सेवारत) की क्षमता में सुधार करना प्रशिक्षण)। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (एनसीटीई), एक वैधानिक निकाय है सेवापूर्व प्रशिक्षण के लिए केंद्र सरकार की योजना बनाई गई है और यह इसके लिए जिम्मेदार है देश में शिक्षक शिक्षा का समन्वित विकास। एनसीटीई ने निर्धारित किया है विभिन्न शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रमों के मानदंड और मानक, न्यूनतम योग्यताएँ शिक्षक प्रशिक्षकों के लिए, पाठ्यक्रम और घटक, और अवधि और न्यूनतम विभिन्न पाठ्यक्रमों में छात्र-अध्यापकों के प्रवेश हेतु योग्यताएँ। यह भी संस्थानों को मान्यता देता है (सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और स्व-वित्तपोषित) ऐसे पाठ्यक्रम शुरू करने के इच्छुक हैं और उनके विनियमन और निगरानी के लिए मौजूद हैं मानदंड और गुणवत्ता। सेवाकालीन प्रशिक्षण के लिए, राज्य के स्वामित्व वाले शिक्षक प्रशिक्षण का एक बड़ा नेटवर्क है देश में संस्थान (टीटीआई), जो स्कूलों में सेवाकालीन प्रशिक्षण प्रदान करते हैं शिक्षकों की। इन टीटीआई का प्रसार रैखिक और क्षैतिज दोनों है। राष्ट्रीय पर स्तर, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद छह के साथ क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान विभिन्न शिक्षकों के लिए मॉड्यूल का एक सेट विकसित करते हैं प्रशिक्षण पाठ्यक्रम और शिक्षकों के प्रशिक्षण के विशिष्ट कार्यक्रम भी चलाते हैं शिक्षक प्रशिक्षक. राष्ट्रीय विश्वविद्यालय द्वारा संस्थागत सहायता भी प्रदान की जाती है शैक्षिक योजना और प्रशासन के. एनसीईआरटी और एनआईईपीए दोनों हैं राष्ट्रीय स्तर के स्वायत्त निकाय। राज्य स्तर पर, राज्य परिषदें शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण (एससीईआरटी) शिक्षक प्रशिक्षण मॉड्यूल तैयार करते हैं और शिक्षक प्रशिक्षकों और स्कूल शिक्षकों के लिए विशिष्ट पाठ्यक्रम संचालित करें। के कॉलेज शिक्षक शिक्षा (सीटीई) और शिक्षा में उन्नत अध्ययन संस्थान (आईएएसई) माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों को सेवाकालीन प्रशिक्षण प्रदान करते हैं शिक्षक और शिक्षक प्रशिक्षक. जिला स्तर पर सेवाकालीन प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डीआईईटी) द्वारा। ब्लॉक संसाधन केंद्र (बीआरसी) और क्लस्टर संसाधन केंद्र (सीआरसी) सबसे निचले पायदान पर हैं स्कूल में सेवाकालीन प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए रैखिक पदानुक्रम में संस्थान शिक्षकों की। इनके अलावा, इन-सर्विस ट्रेनिंग भी दीएक्टिव के साथ प्रदान की जाती है नागरिक समाज, गैर सहायता प्राप्त स्कूलों और अन्य प्रतिष्ठानों की भागीदारी।

शिक्षक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा

नेशनल काउंसिल ऑफ टीचर एजुकेशन (एनसीटीई) ने नेशनल तैयार किया है शिक्षक शिक्षा पर पाठ्यचर्या की रूपरेखा, जिसे चालू किया गया था मार्च 2009. यह रूपरेखा एनसीएफ, 2005 की पृष्ठभूमि में तैयार की गई है। और निःशुल्क एवं अनिवार्य बच्चों के अधिकार में निर्धारित सिद्धांत शिक्षा अधिनियम, 2009 ने शिक्षक शिक्षा पर एक परिवर्तित ढांचे को अनिवार्य कर दिया, जो एनसीएफ, 2005 में अनुशंसित स्कूली पाठ्यक्रम के अनुरूप है

शिक्षक शिक्षा के दर्शन को समझाते हुए बदला हुआ दर्शन, यह फ्रेमवर्क में नए दृष्टिकोण के कुछ महत्वपूर्ण आयाम हैं: भारतीय संस्कृति और दर्शन का इस समृद्ध विश्व पर बहुत गहरा प्रभाव रहा है विरासत को न केवल आने वाली पीढ़ियों के लिए संरक्षित और संरक्षित करने की जरूरत है लेकिन हमारी शिक्षा व्यवस्था को मजबूत बनाए रखने के लिए शोध कार्यों को बढ़ावा देना चाहिए नये शोध किये जाने चाहिए. उपयोगकर्ताओं पर भी विचार किया जाना चाहिए. प्राचीन काल से, भारत में शिक्षा व्यवस्था का केंद्र बिंदु शिक्षक या गुरु रहा है, जिनके बिना जीवन का अर्थ समझना संभव नहीं है। गुरु को रखा गया है भगवान की श्रेणी में|

शिक्षक शिक्षा के उद्देश्य

शिक्षक शिक्षा मानव एवं सामाजिक जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखती है।शिक्षक शिक्षा के व्यापक उद्देश्य हैं। शिक्षक शिक्षा मानव का आधार है समाज का विकास एवं मजबूत आधार।शिक्षक का मुख्य उद्देश्य शिक्षा का उद्देश्य छात्रों को पेशेवर के रूप में विकसित करना है। इसमें कौन योगदान दे सकता है क्षेत्र?शिक्षक शिक्षा का उद्देश्य समस्त शिक्षण का समुचित विकास करना है छात्र-शिक्षकों में कौशल। इन कौशलों का विकास तभी संभव हो सकता है प्रशिक्षण के दौरान व्यापक अभ्यास। जब तक छात्र शिक्षकों को गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण नहीं मिलेगा, ये कौशल विकसित नहीं हो सकते. शिक्षण के मुख्य रूप से विभिन्न कौशल हैं, जो हैं परिचय कौशल, स्पष्टीकरण कौशल, प्रश्न पूछने का कौशल, ब्लैकबोर्ड कार्य कौशल, सुदृढीकरण कौशल और चित्रण कौशल। शिक्षण-अधिगम कराना प्रक्रिया प्रभावी, छात्र में उपरोक्त सभी शिक्षण कौशल का समुचित विकास शिक्षक आवश्यक है. इन कौशलों के विकास से वे सफल होते हैं पाठ्यक्रम में बच्चों की रुचि जगाने, सहायता से पाठ विकसित करने में शिक्षण में बच्चों की भागीदारी बढ़ाने के साथ-साथ बच्चों की भागीदारी भी बढ़ाई जा रही है बच्चों का सीखने का स्तर. कक्षा में सभी बच्चे एक जैसे नहीं होते। को समझना बच्चों की व्यक्तिगत भिन्नताएं और उनकी क्षमताओं के अनुसार उन्हें पढ़ाना और क्षमताएं एक चुनौती है. लेकिन जब तक हम इसके आधार पर शिक्षण-अधिगम कार्य की योजना नहीं बनाते बच्चों की व्यक्तिगत भिन्नताओं को बढ़ाने में सफलता नहीं मिल पाती बच्चों की सीखने की क्षमता और उनके शिक्षण प्रदर्शन का विकास करना। में से एक शिक्षक शिक्षा का उद्देश्य विभिन्न माध्यमों से शिक्षण को रुचिकर बनाना है शिक्षण सहायक सामग्री के प्रकार और संबंधित शैक्षिक गतिविधियाँ ताकि बच्चे सीख सकें सुनने और देखने दोनों के माध्यम से अधिक और बेहतर। इससे उनके होश उड़ गए अधिक सक्रिय रहें जिससे उनके सीखने के स्तर को बढ़ाया जा सके और यह सीखने को मस्तिष्क में भी लंबे समय तक संरक्षित रखा जा सकता है। निम्नलिखित हैं शिक्षक शिक्षा के मुख्य उद्देश्य जिन्हें गुणवत्ता के लिए प्राप्त करना आवश्यक है

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया:-

- छात्र शिक्षकों को छात्रों की समस्याओं को हल करने में सक्षम बनाना।

 शिष्य-शिक्षकों के मन में उचित अनुशासन पैदा करना।

 शिष्य-शिक्षकों को नवीनतम ज्ञान से परिचित कराना

समाज की मौजूदा जरूरतें।

 सिखाए गए अनुभव को प्रोत्साहित करने के लिए एक कौशल विकसित करना

कृत्रिम रूप से निर्मित पर्यावरण, भौतिक संसाधनों से कम और अधिक द्‌वारा

भावनात्मक माहौल का निर्माण.

 करने, निरीक्षण करने, अनुमान लगाने और सामान्यीकरण करने की क्षमता विकसित करना।

 विषय के बारे में पर्याप्त ज्ञान प्रदान करना।

 छात्र-शिक्षकों को आवश्यक शिक्षण कौशल से सुसज्जित करना।

 शिक्षण के प्रति उचित दृष्टिकोण विकसित करना।

 छात्र-शिक्षकों में आत्मविश्वास विकसित करना।

 आईसीटी उपकरणों के उचित उपयोग को बढ़ावा देना।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 एवं शिक्षक शिक्षा

वर्तमान समय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी सबसे अधिक जोर दिया गया है गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए शिक्षकों का महत्व. इसे तभी हासिल किया जा सकता है गुणवत्तापूर्ण शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से। इसमें बताया गया है कि पहचानें और प्रत्येक छात्र, शिक्षक और माता-पिता की अद्‌वितीय क्षमताओं को विकसित करना होगा उनकी क्षमताओं के प्रति संवेदनशील. ताकि विद्यार्थियों की शैक्षणिक एवं अन्य क्षमताएं पूर्णतया विकसित किया जा सकता है। उच्च शिक्षा के अनुभवात्मक क्षेत्रों तक पहुंच खुल सकती हैअपार संभावनाओं के द्‌वार जो व्यक्तियों और समुदायों को इससे ऊपर उठा सकते हैं ख़राब घेरा। इसीलिए उच्च गुणवत्ता वाले शिक्षक के लिए अवसर प्रदान करना सभी को शिक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए। शिक्षक छात्र और शिक्षक दोनों मिलकर बच्चों का भविष्य बनाते हैं हमारे समृद्‌ध राष्ट्र का निर्माण करें। मेधावी विद्‌यार्थी और योग्य शिक्षक हैं अपने पूर्ण योगदान के कारण वे सदैव समाज के सम्मानित सदस्य रहे। विद्‌वान हमेशा अच्छे शिक्षक बनते हैं। प्राचीन सभ्यताओं के अनुसार अच्छा है शिक्षक निर्धारित ज्ञान, कौशल और नैतिक मूल्य प्रदान करने के लिए काम करते हैं छात्र. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में इस बात पर विशेष ध्यान दिया गया है शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता, भर्ती, पोस्टिंग, सेवा शर्तें, और शिक्षकों के अधिकारों की स्थिति उपरोक्त तथ्यों पर ध्यान देने से ही

गुणवत्ता का पता चलता है शिक्षक शिक्षा और शिक्षकों के उत्साह से लक्ष्य हासिल होगा मानक। छात्र भी शिक्षकों के प्रति उच्च स्थिति और सम्मान को पुनर्जीवित करेंगे प्राचीन सभ्यता के अनुसार. अपने राष्ट्र को सर्वोत्तम राष्ट्र बनाने के लिए एक शिक्षकों और छात्रों में प्रेरणा और सशक्तिकरण की आवश्यकता। अच्छे का अभाव ग्रामीण क्षेत्रों में शैक्षणिक संस्थाएँ सदियों से चली आ रही हैं, जिसका कारण है युवा पीढ़ी अध्ययन और अध्यापन में पिछड़ रही है। विशेष ध्यान दिया गया है इसे राष्ट्रीय शिक्षा नीति और शिक्षक शिक्षा में शामिल किया गया है। एक प्रावधान है में पढ़ने वाले छात्रों को योग्यता के आधार पर छात्रवृत्ति की अनुमति देने का प्रावधान किया गया है अवधि। चार वर्षीय स्नातक शिक्षा कार्यक्रम भी उपलब्ध कराने का प्रावधान किया गया है स्थानीय क्षेत्रों में छात्रों (विशेषकर महिला छात्रों) को रोजगार का आश्वासन दिया डिग्री के सफल समापन के बाद ताकि ये छात्र भूमिका निभा सकें स्थानीय क्षेत्रों में और उच्च शिक्षकों के रूप में मॉडल। उत्कृष्ट शिक्षकों को विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा जहां पहले से ही शिक्षकों की कमी है. शिक्षण के लिए एक प्रमुख प्रोत्साहन ग्रामीण क्षेत्रों में छात्रों को स्थानीय आवास की भी व्यवस्था की गई है स्कूल के आसपास. रिश्ते को कायम रखना शिक्षक की जिम्मेदारी है समुदाय के बीच ताकि छात्र को शैक्षिक क्षेत्र में रोल मॉडल मिल सकें जो कि शिक्षक के बार-बार स्थानांतरण के कारण संभव नहीं हो पाता है। इसलिए कहा गया है कि शिक्षक का स्थानांतरण ही किया जाये जब यह सरकार द्वारा आवश्यक हो। के माध्यम से शिक्षकों का चयन किया जाए इसके लिए विशेष प्रतियोगी परीक्षाओं पर जोर दिया गया है शिक्षक पात्रता परीक्षा का विकास. शिक्षक एक अभिन्न अंग हैं भर्ती प्रक्रिया, इसके लिए सभी साक्षात्कार स्थानीय भाषा में आयोजित किये जा सकते हैं किसी भी व्यक्ति की कार्यक्षमता का सटीक आकलन करें। ऐसा करने से विशेष बल मिलता है इस बात पर भी जोर दिया गया कि शिक्षक प्रचलित तरीके से बातचीत कर सकेंगे छात्रों की भाषा. विद्यार्थियों का संपूर्ण विकास केवल पढ़ाई से नहीं होता संबंधित विषय. संपूर्ण विकास के लिए छात्रों को इसका ज्ञान होना जरूरी है कला, शारीरिक शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा और प्रतियोगी परीक्षाएँ। के लिए इसमें सभी संभावित शिक्षकों की नियुक्ति पर भी जोर दिया गया है राज्य और केंद्र शासित प्रदेश. इसमें क्वालिटी प्रमोशन की भी बात हो रही है आवश्यकतानुसार शिक्षकों की भर्ती। प्राथमिक लक्ष्य मौलिक रूप से है स्कूल के कामकाजी माहौल और संस्कृति को बदलें ताकि दोनों शिक्षक और छात्र अधिकतम विकास कर सकते हैं। बदलते परिवेश और संस्कृतियाँ शिक्षकों, छात्रों, अभिभावकों को सक्षम बनाएंगी। प्राचार्यों और अन्य सहायक कर्मचारियों को एक समावेशी समुदाय का हिस्सा बनने के लिए प्रोत्साहित करें। के सभी इनका एक ही लक्ष्य है कि यह सुनिश्चित किया जाए कि सभी छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले। को स्कूलों में सभ्य और आनंददायक कार्य सुनिश्चित करने के लिए संसाधनों की विशेष आवश्यकता है जैसे भौतिक संसाधन, शौचालय, स्वच्छ पेयजल, स्वच्छ एवं आकर्षक स्थान सीखने, बिजली, कंप्यूटर उपकरण, इंटरनेट, पुस्तकालय और खेल आदि के लिए मनोरंजन सुविधाओं। इन सभी जरूरी चीजों पर विशेष जोर दिया गया है राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा प्रदान करने का प्रयास किया जा रहा है छोटे-छोटे स्कूल-कॉलेजों को मिलाकर बनाया गया कॉम्प्लेक्स भी काफी कारगर होगा। यह छात्रों को बड़े समुदाय के साथ सीखने की अनुमति देगा। शिक्षकों को आगे बढ़ाने के लिए और सीखने के लिए प्रभावी सामुदायिक वातावरण

बनाने में मदद करें।

शिक्षक शिक्षा और भाषा

नई शिक्षा नीति में शिक्षा के माध्यम को यथावत रखने की बात कही गई है पांचवीं कक्षा तक मातृभाषा, स्थानीय या क्षेत्रीय भाषा। यह हो सकता है कक्षा आठ या उससे आगे तक बढ़ाया गया। से विदेशी भाषाएं पढ़ाई जाएंगी द्विवितीयक स्तर। हालाँकि, नई शिक्षा नीति में यह भी कहा गया है कि नहीं भाषा थोपी जाएगी. भाषा विचारों के आदान-प्रदान का एक सशक्त माध्यम है। माँ प्रथम है किसी भी बच्चे का शैक्षणिक शिक्षक। यह एक सार्वभौमिक सत्य है जो छोटे बच्चे सीखते हैं और सार्थक अवधारणाओं को अपनी घरेलू भाषा में अधिक तेज़ी से समझते हैं या मातृ भाषा। बालक को सर्वप्रथम सामाजिक कल्याण एवं बौद्धिकता का गुण प्राप्त होता है माँ से शिक्षा के रूप में नेतृत्व. हम भारत के लोग हैं उस गौरवशाली सनातन संस्कृति के संवाहक, जहाँ सद्भावना की शुभ कामनाएँ और हर प्राणी का कल्याण लोगों में निहित है। निश्चित रूप से, के लिए राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए यथासंभव प्रयास करने चाहिए प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कहा गया है कि कम से कम पांचवीं कक्षा तक लेकिन अधिमानतः आठवीं कक्षा और उससे आगे तक, शिक्षा का माध्यम घरेलू भाषा होगी, मातृभाषा, स्थानीय भाषा, क्षेत्रीय भाषा। इसके बाद घर, स्थानीय जहाँ भी संभव हो भाषा को भाषा के रूप में पढ़ाया जाता रहेगा। दोनों सार्वजनिक और निजी स्कूल इसका पालन करेंगे. सहित सभी विषयों में उच्च गुणवत्ता वाली पाठ्यपुस्तकें विज्ञान को घरेलू भाषाओं, मातृभाषा में उपलब्ध कराया जाएगा। सारे प्रयास होंगे यह सुनिश्चित करने के लिए शीघ्रता से किया जाना चाहिए कि भाषा के बीच अंतर, यदि कोई हो, मौजूद है बच्चों द्वारा बोली जाने वाली बात और शिक्षा का माध्यम ही आपस में जुड़ जाता है। शिक्षकों की उन छात्रों के साथ द्विभाषी दृष्टिकोण का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा जिनकी घरेलू भाषा है उनकी मातृभाषा शिक्षा से भिन्न है। शोध से पता चलता है कि बच्चे इस उम्र के बीच सबसे तेजी से भाषा सीखते हैं दो और आठ और बहुभाषावाद के लिए सबसे बड़ा संज्ञानात्मक लाभ है उस उम्र में छात्र. बच्चों को कई भाषाओं का अनुभव दिया जाएगा प्रारंभ से ही मातृभाषा पर विशेष जोर दिया गया मूलभूत चरण और उसके बाद। की ओर से यह एक बड़ा प्रयास होगा केंद्र और राज्य सरकारें पर्याप्त संख्या में भाषा में निवेश करें देश भर की सभी क्षेत्रीय भाषाओं में, विशेषकर सभी भाषाओं में शिक्षक संविधान की आठवीं अनुसूची में उल्लेखित है। द्विपक्षीय समझौते राज्यों के बीच, विशेष रूप से भारत के विभिन्न क्षेत्रों के राज्यों को, अपने-अपने राज्यों में त्रिभाषा फार्मूले को अपनाने के साथ-साथ पर्याप्त संख्या में नियुक्त करने के लिए देश भर में भारतीय भाषाओं के अध्ययन को प्रोत्साहित करने के लिए शिक्षकों की नियुक्ति। विभिन्न भाषाओं को सीखने और लोकप्रिय बनाने के लिए प्रौद्योगिकी का बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाएगा भाषा शिक्षण। शिक्षक शिक्षा ऐसे शिक्षकों की टीम बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है जो ऐसा करेंगे उच्च शिक्षण संस्थानों में अगली पीढ़ी को आकार दें। शिक्षकों को तैयार करना एक है ऐसी प्रक्रिया जिसके लिए बहुत ही संयुक्त दृष्टिकोण और ज्ञान के साथ-साथ निर्माण की भी आवश्यकता होती है सर्वोत्तम तथ्यों के मार्गदर्शन के साथ-साथ उनके अभ्यास के तहत विश्वास और मूल्य। यह

यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि शिक्षक भारतीय मूल्यों, भाषाओं से अवगत हों, ज्ञान, लोकाचार और परंपराएँ, जिनमें अकादमिक के साथ-साथ जनजातीय परंपराएँ भी शामिल हैं शिक्षा और शिक्षण प्रक्रियाओं से संबंधित प्रगति। शिक्षक शिक्षा के लिए बहु-विषयक इनपुट के साथ-साथ उच्च गुणवत्ता वाली सामग्री की भी आवश्यकता होती है और शैक्षणिक प्रक्रियाएं। अत: इसी बात को ध्यान में रखते हुए सभी अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम समग्र बहु-विषयक संस्थानों में ही आयोजित किए जाने चाहिए। के लिए यह, सभी बहु-विषयक विश्वविद्यालय, साथ ही सभी सार्वजनिक और बड़े विश्वविद्यालय बहु-विषयक कॉलेजों का लक्ष्य उत्कृष्ट शिक्षा स्थापित करना और विकसित करना होगा विभाग, जो शिक्षा में अत्याधुनिक अनुसंधान को बढ़ावा देते हैं, साथ ही भविष्य में शिक्षकों को शिक्षित करने के लिए मनोविज्ञान के सहयोग से भी कार्यक्रम संचालित किये जायेंगे दर्शनशास्त्र, समाजशास्त्र, तंत्रिका विज्ञान, भारतीय भाषाएँ, कला, से संबंधित विभाग संगीत, आदि और साहित्य के साथ-साथ विज्ञान और जैसे अन्य विशिष्ट विषय अंक शास्त्र। इसके साथ ही वर्ष 2030 तक सभी एकल-शिक्षक शिक्षा संस्थानों को बहु-विषयक संस्थानों में परिवर्तित करने की आवश्यकता होगी, जैसा कि वे हैं चार वर्षीय एकीकृत शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित करने होंगे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार फैकल्टी के प्रोफाइल में विविधता शिक्षा विभाग में सदस्य बनाना एक आवश्यक लक्ष्य है। सामाजिक विज्ञान क्षेत्र सीधे स्कूली शिक्षा से संबंधित, जैसे मनोविज्ञान, बाल विकास, भाषा, विज्ञान, समाजशास्त्र, दर्शनशास्त्र, अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान भी जैसे विज्ञान शिक्षा, गणित, शिक्षा, सामाजिक विज्ञान शिक्षा, और भाषा शिक्षा. प्रशिक्षित संकाय को आकर्षित करने और नियुक्त करने का प्रावधान है कार्यक्रमों से संबंधित विषयों में शिक्षक शिक्षा संस्थानों में सदस्यों को शिक्षकों की बहु-विषयक शिक्षा और उनकी वैचारिकता को मजबूत करना विकास।महाविद्यालयों में सेवारत शिक्षकों के लिए व्यावसायिक विकास प्रशिक्षण जारी रखनाऔर विश्वविद्यालयों को मौजूदा संस्थागत व्यवस्थाओं के माध्यम से प्रशिक्षित किया जाएगा राष्ट्रीय शिक्षा नीति में चल रहे पहलू जारी रहेंगे। ये होंगे समृद्ध शिक्षण और सीखने की जरूरतों को पूरा करने के लिए मजबूत और विस्तारित किया गया गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए आवश्यक प्रक्रियाएँ। जैसे तकनीकी प्लेटफार्मों का उपयोग शिक्षकों के ऑनलाइन प्रशिक्षण के लिए स्वयं-दीक्षा को प्रोत्साहित किया जाएगा मानकीकृत प्रशिक्षण कार्यक्रम कम समय में अधिक शिक्षकों को उपलब्ध कराये जा सकते हैं समय।

निष्कर्ष

इस प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का मूल उद्देश्य परिलक्षित होता है अच्छे इंसानों का विकास करना है जो तर्कसंगत विचार और कार्य करने में सक्षम होंकरुणा और सहानुभूति, साहस और लचीलेपन, वैज्ञानिक सोच और के साथ रचनात्मक कल्पना, नैतिक मूल्य और भावनाएँ। इसका उद्देश्य ऐसे तैयार करना है उत्पादक लोग जो समावेशी निर्माण में बेहतर तरीके से योगदान देंगे इसके संविधान द्वारा परिकल्पित बहुलवादी समाज ताकि भारत फिर से एक भूमिका निभा सके विश्वगुरु का दर्जा पुनः प्राप्त करके मानवता के विकास में अग्रणी भूमिका। एनईपी 2020 प्रेरणाहीन और निराश की वास्तविकता को स्वीकार करता है भारतीय शिक्षकों और शिक्षण पेशे को

पूरी तरह से बदलने का प्रस्ताव कार्यकाल, वेतन और पदोन्नति की एक मजबूत योग्यता-आधारित संरचना बनाएं उत्कृष्ट शिक्षकों को प्रोत्साहित और मान्यता देता है। NEP-2020 दूरदर्शी है, व्यावहारिक, प्रगतिशील और व्यापक। इसका दायरा प्रारंभिक बचपन से लेकर तक है उच्च शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा से व्यावसायिक शिक्षा और शिक्षक व्यावसायिक शिक्षा के लिए प्रशिक्षण. जैसा कि नीति की परिकल्पना है कि शिक्षक शिक्षा मौलिक का केंद्र होना चाहिए शिक्षा प्रणाली में सुधार, नई शिक्षा नीति को पुनः स्थापित करने में मदद करनी चाहिए शिक्षक, सभी स्तरों पर हमारे समाज के सबसे सम्मानित और आवश्यक सदस्य हैं क्योंकि वे वास्तव में हमारी अगली पीढ़ी के नागरिकों को आकार देते हैं। इसके लिए सबकुछ करना होगा शिक्षकों को सशक्त बनाना और उन्हें अपना काम यथासंभव प्रभावी ढंग से करने में मदद करना। किसी छात्र के 360-डिग्री मूल्यांकन के संबंध में, प्रगति कार्ड में स्व-मूल्यांकन, सहकर्मी-मूल्यांकन और शिक्षक मूल्यांकन शामिल होंगे। एक बहुआयामी रिपोर्ट कार्ड तैयार किया जाएगा जो प्रत्येक शिक्षार्थी की प्रगति और विशिष्टता को दर्शाएगा संज्ञानात्मक, भावात्मक और मनोप्रेरणा क्षेत्र में। कौशल एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण और कोडिंग क्लाससिक्स से शुरू होगी। तदनुसार, सभी शिक्षकों को पता होना चाहिए आईसीटी के बारे में और प्रत्येक शिक्षक और माता-पिता में कौशल की पहचान करना आवश्यक होगा सी को हासिल करने के लिए. यह माना जाता है कि कई शैक्षणिक हो सकते हैं विशेष विषयों को पढ़ाने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर दृष्टिकोण। एनसीईआरटी में एससीईआरटी, एनआईओएस आदि के सहयोग से अध्ययन, अनुसंधान, दस्तावेजीकरण और संकलन किया जाएगा विभिन्न विषयों को पढ़ाने के लिए विविध अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक दृष्टिकोण और इनसे क्या सीखा और आत्मसात किया जा सकता है, इस पर सिफारिशें करें भारत में प्रचलित शिक्षाशास्त्र में दृष्टिकोण।

संदर्भ

गैरीसन, जी.आर. (1985)। दूरी में तकनीकी नवाचार की तीन पीढ़ियाँ शिक्षा। दूरस्थ शिक्षा, 6(2), 235-241।

फरस्वान, डी.एस. (2023)। बी.एड. की विभिन्न समस्याओं की समीक्षा। विशेष शिक्षा। जर्नल ऑफ़ एडवांस्ड एजुकेशन एंड साइंसेज, 3(1), 11-15।

फरस्वान, डी.एस. (2017)। शिक्षक शिक्षा में नवीन पद्धतियाँ भारत। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ करंट रिसर्च, 9(4), 49593-49596।

फरस्वान, डी.एस. (2022)। स्कूल छोड़ने की समस्याओं का अध्ययन और सरकार में पढ़ने वाले बच्चों के बीच नामांकन

उत्तराखंड के गदरपुर ब्लॉक में प्राथमिक विद्यालय।

इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी एजुकेशनल रिसर्च, 10 (3), 65-71।

सिंह, एफ.डी. (2019)। सीखने-सिखाने के लिए शिक्षण कौशल का महत्व प्रक्रिया। द रिसर्च जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज, 10(6)।

सिंह, एफ.डी. (2019)। शिक्षक शिक्षा में आईसीटी की भूमिका। का रिसर्च जर्नल सामाजिक विज्ञान, 10(4).

फरस्वान, डी.एस. (2019)। दूरस्थ शिक्षा में आर-लर्निंग की भूमिका: समस्याएँ औरbभारत में संभावनाएं. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन सोशल साइंसेज, 9(4), 920- 928.

फरस्वान, डी.एस. (2022)। अभ्यास शिक्षण के दौरान उत्पन्न होने वाली समस्याओं का अध्ययन एवं बीएड में छात्र-शिक्षक की इंटर्नशिप अवधि। जर्नल ऑफ इमर्जिंग टेक्नोलॉजीज औरbइनोवेटिव रिसर्च (जेईटीआईआर), 9(10), 58-66।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति)2020) भारत सरकार, नई दिल्ली।राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020:शिक्षक शिक्षा के संदर्भ में